"हरि की सेवा"

1. सेवा सुरत सबद चित लाए । करम होवै सतिगुर मिलाए ।
हउमै मार सदा सुख पाइआ - माइआ मोह चुकावणिआ ।
(110)

अर्थ:- जिस मनुष्य पर प्रभु की बख्शिश हो, उसे प्रभु गुरु से मिलाता है (गुरु की मेहर से वह मनुष्य) सेवा (शब्द गुरु विशेष का कहा हूबहू स्वेच्छा से मानना, मन में बिना संशय विशेष लाये) में ध्यान टिकाता है, गुरु के शब्द में चित्त जोड़ता है । (इस तरह) वह (अपने अंदर से)

अहंकार को मार के माया का मोह दूर करता है, और सदैव आत्मिक आनंद प्राप्त करता है ।

2. गुर सेवा ते सुख ऊपजे - फिर दुख न लगै आइ । जमण-मरणा मिट गइआ - काले का किछु न बसाइ । हरि सेती मन रव रहिआ - सचे रहिआ समाइ ।

अर्थः- सतिगुरु की सेवा से मनुष्य को सुख प्राप्त होता है, फिर कभी कष्ट नहीं होता, उसका जनम-मरण समाप्त हो जाता है और जमकाल का कुछ जोर (वश) नहीं चलता; हरि से उसका मन मिला रहता है और वह सच्चे में समाया रहता है ।

नानक हउ बलिहारी तिंन कउ - जो चलन सतिगुर भाइ ।

अर्थः- हे नानक ! मैं उनसे सदके जाता हूँ, जो सतिगुरु के प्यार में चलते हैं।

बिन सबदै सुध न होवई - जे अनेक करै सीगार । पिर की सार न जाणई - दूजै भाइ पिआर । सा कुसुध सा कुलखणी - नानक नारी विच कुनार ।

अर्थः- सतिगुरु के शब्द के बिना (जीव-स्त्री) चाहे बेअंत श्रृंगार करे शुद्ध नहीं हो सकती, (क्योंकि) वह पति की कद्र नहीं जानती और उसकी माया में तवज्जो होती है । हे नानक ! ऐसी जीव-स्त्री मन की खोटी और बुरे लक्षणों वाली होती है और नारियों में वह बुरी नारि (कहलाती) है ।

हरि-हरि अपणी दइआ कर - हरि बोली बैणी । हरि नाम धिआई - हरि उचरा - हरि लाहा लैणी ।

अर्थः- हे हरि ! अपनी मेहर कर, मैं तेरी वाणी (भाव, तेरा यश) उचारूँ, हरि का नाम स्मरण करूँ, हरि का नाम उच्चारण करूँ और यही लाभ कमाऊँ ।

जो जपदे हरि-हरि दिनस-रात - तिन हउ कुरबैणी । जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ - तिन जन देखा नैणी ।

अर्थः- मैं उनसे कुर्बान जाता हूँ, जो दिन रात हरि का नाम जपते हैं, उनको मैं अपनी आँखों से देखूँ जो प्यारे सतिगुरु की सेवा करते हैं ।

हउ वारिआ अपणे गुरू कउ - जिन मेरा हरि सजण मेलिआ सैणी । (651)

अर्थः- मैं अपने सतिगुरु से सदके हूँ, जिसने मुझे प्यारा सज्जन प्रभु साथी मिला दिया है ।

3. गुर सेवा ते भगत कमाई । तब इह मानस देही पाई । इस देही कउ सिमरह देव । सो देही भज हरि की सेव । (1159)

अर्थः- हे भाई ! अगर तू गुरु की सेवा(शब्द गुरु विशेष का कहा हूबहू स्वेच्छा से मानना, मन में बिना संशय विशेष लाये) से बँदगी की कमाई करे, तो ही यह मनुष्य-शरीर मिला हुआ समझ । इस शरीर के लिए

तो देवते भी तरसते हैं । तुझे ये शरीर (मिला है, इससे) नाम स्मरण कर, हरि का भजन कर ।

भजहु गुबिंद भूल मत जाहु । मानस जनम का एही लाहु ।

अर्थः- हे भाई ! शब्द गुरु विशेष को स्मरण करो, ये बात भुला ना देनी । यह नाम-जपना ही मनुष्य-जन्म की कमाई है ।

जब लग जरा रोग नही आइआ । जब लग काल ग्रसी नही काइआ । जब लग बिकल भई नही बानी । भज लेह रे मन सारिगपानी ।

अर्थः- जब तक बुढ़ापा-रूपी रोग नहीं आ गया, जब तक तेरे शरीर को मौत ने नहीं जकड़ा, जब तक तेरी ज़बान थिरकने नहीं लग जाती, (उससे पहले पहले ही) हे मेरे मन ! परमात्मा का भजन कर ले ।

अब न भजस भजस कब भाई । आवै अंत न भजिआ जाई । जो किछु करह सोई अब सार । फिर पछुताहु न पावहु पार ।

अर्थः- हे भाई ! यदि तू इस वक्त भजन नहीं करता, तो फिर कब करेगा ? जब मौत (सिर पर) आ पहुँची उस वक्त तो भजन हो नहीं सकेगा ! जो कुछ (भजन-स्मरण) तू करना चाहता है, अभी ही कर ले, (यदि समय गुजर गया) तो फिर अफसोस ही करेगा, और इस पछतावे में से खलासी नहीं होगी ।

सो सेवक जो लाइआ सेव । तिन ही पाए निरंजन देव । गुर मिल ता के खुल्हे कपाट । बहुर न आवै जोनी बाट ।

अर्थः- (पर जीव के भी क्या वश ?) जिस मनुष्य को प्रभु स्वयं बँदगी में जोड़ता है, वही उसका सेवक बनता है, उसी को प्रभु मिलता है, सतिगुरु को मिल के उसके मन के किवाड़ खुलते हैं, और वह दोबारा जनम (मरण) के चक्कर में नहीं आता ।

इही तेरा अउसर इह तेरी बार । घट भीतर तू देख बिचार ।
कहत कबीर जीत के हार । बहु बिध कहिओ पुकार पुकार ।

अर्थः- कबीर कहता है: हे भाई ! मैं तुझे कई तरीकों से चिल्ला-चिल्ला के बता रहा हूँ, (तेरी मर्जी है इस मनुष्य जनम की बाज़ी) जीत के जा चाहे हार के जा । तू अपने हृदय में विचार करके देख ले (प्रभु को मिलने का) यह मानव-जनम ही मौका है, यही बारी है (यहाँ से टूट के समय नहीं मिलना) ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"